Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara

Date; 19/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-

परिघटनात्मक मॉडल के लाभ **(advantages)** एवं परिसीमाएँ **(limitations)**

(1) लाभ (advantages): परिघटनात्मक मॉडल व्यक्ति के अनुभूतियों को काफी महत्व देता है। फलतः इस मॉडल का स्वागत उन सभी व्यक्तियों द्वारा किया जाता है जिन्होंने अपनी जिन्दगी को समझने का आधार अपनी अनुभूति माना है।

(2) परिघटनात्मक मॉडल में प्रत्येक व्यक्ति में छिपे अपूर्वता (uniqueness) की स्वतंभ पहचान की जाती है। इससे इस मॉडल का सामान्यीकरण अधिकतर लोगों के लिए प्रायः सही ठहरता है।

(3) परिघटनात्मक मॉडल मानव व्यवहार को समझने के लिए एक आशावादी दृष्टिकोण अपनाता है क्योंकि उसमें मानवः जीवन के अन्तःशक्ति (Potential) तथा उसके उपयुक्त वर्द्धन की क्षमता पर अधिक बल डाला जाता है।

उर्पयुक्त लाभों या गुणों के बावजूद परिघटनात्मक मॉडल की कुछ परिसीमाएँ निम्न है-

(1) परिघटनात्मक मॉडल को आलोचक मनोवैज्ञानिकों ने आशिक तथा एक तरफा कहा है क्योंकि यह मॉडल तात्कालिक चेतन अनुभूति पर अधिक बल डालता है तथा व्यवहार के अन्य महत्वपूर्ण निर्धारक जैसे अचेतन अभिप्रेरणा, पुनर्बलन संभाव्यता, परिस्थिति जनम प्रभावों तथा साथ ही साथ कुछ जैविक कारकों की पूर्णतः उपेक्षा की गयी है।

(2) कुछ आलोचकों का मत है कि परिघटनातमक मॉडल के संप्रत्यय अस्पष्ट (vague) हैं जिन्हें समझा नहीं जा सकता है तथा जिस पर अनुसंधान भी नहीं किया जा सकता है। इन संप्रत्ययों के आधार पर मानव व्यवहार के वारे में जॉचनीय प्राक्कल्पना (testable hypothesis) ज्ञात करना संभव नहीं है।

(3) परिघटनात्मक मॉडल मानव व्यवहार के विकास की उत्तम व्याख्या नहीं करता है। यह कह देने से कि आत्मसिद्धि ती एक जन्मजात प्रवृत्ति व्यक्ति में होती है, इससे व्यक्ति के विकास के कारण का तो पता चलता है परन्तु उससे विकास की व्याख्या हीं हो पाती है।

(4) इस मॉडल की एक आलोचना यह भी है कि इस मॉडल के संप्रत्यय द्वारा मानव व्यवहार की एक उत्तम व्याख्या तो हो पाती है परंतु इससे उसके कारणों का वैज्ञानिक खोज तो नहीं हो पाता है। यह कह देना कि प्रत्येक व्यक्ति जैसा व्यवहार करना चाहता है, वैसा यह करता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा वास्तविकता का किया गया प्रत्यक्षण अपूर्व (unique) होता है, वैयक्तिक रूप से संतोषजनक मले ही हो, परन्तु इसके आधार पर उनचरों को

जिनसे मानव व्यवहार का विकास होता है या वे संघोषित होते हैं या उनमें परिभार्जन होता है, को तो समझा नहीं जाता है।

(5) परिघटनात्मक मॉडल की नैदानिक उपयोगिता भी काफी सौमित वतलायी गयी है। यह मॉडल उन व्यक्तियों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है जिनकी सांस्कृतिक एवं वौद्धिक पृष्ठभूमि कुछ ऐसी रही है जिसे उत्तम कहा जा सके तथा जिनमें लोग अपनी समस्याओं का अन्तनिरीक्षण कर पाते हों। यह मॉडल उस परिस्थिति में भी व्यक्तियों की समस्यात्मक व्यवहार की व्याख्या संतोषजनक ढंग से कर लेता है जिसकी उत्पत्ति का कारण मूल्य (Value) या पहचान से संवद्ध संकट हो परन्तु जब यही संकट का कारण मैसलो द्वारा बतलाये पदानुक्रम के निम्न श्रेणी की असंतुष्ट आवश्यकताएँ होती हैं, तो उसकी व्याख्या करने में मॉडल उतनी सार्थक भूमिका नहीं निभा पाती है।

उर्पयुक्त परिसीमाओं के बावजूद परिघटनात्मक मॉडल नैदानिक मनोविज्ञान का एक प्रमुख मॉडल माना जाता है। इसकी उपयोगिता तथा लोकप्रियता इस बात में निहित है कि इसमें मानव प्रवृत्ति का एक आदर्शवादी तस्वीर उपस्थिति करके समस्यात्मक व्यवहार को समझने तथा उसके उपचार करने पर बड डाला गया है।